IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत के मुक्ति संग्राम में महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य

डॉ मनोज कुमार सिंह(असिस्टेंट प्रोफेसर-इतिहास) राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ जौनपुर

प्रस्तावना:-

गांधी जी का रचनात्मक कार्यक्रम आदर्श समाज निर्माण करने का साधन भी है और साध्य भी। इसका उद्देश्य समाज परिवर्तन के द्वारा एक नए समाज की रचना करना है ,आंदोलन करना उनका उद्देश्य नहीं रहा है। इस संबंध में गांधीजी स्वयं कहते हैं की लड़ाई के द्वारा देश जीता जा सकता है किंतु उसे समृद्धि रचनात्मक कार्य के द्वारा ही किया जा सकता है। गांधीजी की मान्यताओं के मुताबिक समाज परिवर्तन हिंसक जन आंदोलन के द्वारा कभी भी नहीं किया जा सकता और ना ही इसके जरिए टिकाऊ समाज परिवर्तन ही हो सकता है रचनात्मक कार्यक्रम समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का बेहतर तरीका है। इस कार्यक्रम के द्वारा समाज को सिर्फ जागरूक करने की जरूरत है। यदि समाज रचनात्मक कार्यक्रम के उद्देश्य और फायदे के बारे में जानेगा तो अवश्य समाज में संपूर्ण क्रांति एवं समाज परिवर्तन की लहर फैलने लगेगी।

गांधीजी ने 1941 में अपनी पुस्तक **"रचनात्मक कार्यक्रम" की प्रस्तावना में लिखा है कि "रचनात्मक कार्यक्रम ही पूर्ण स्वराज या मुकम्मल आजादी को हासिल करने का सच्चा और अहिंसक रास्ता है" उसकी पूरी पूरी सिद्धि ही संपूर्ण स्वतंत्रता है।** गांधी जी ने समाज की प्रगति के लिए जो रचनात्मक कार्यक्रम दिए वह इस प्रकार है।

(1) कौमी एकता (2)अस्पृश्यता निवारण (3)शराब और मादक द्रव्य निषेध (4)खादी एवं चरखा (5)ग्रामोत्थान। (6) बुनियादी तालीम (7)प्रौढ़ शिक्षा (8)स्त्री शिक्षा (9)कुष्ठ रोगी सेवा (10)ग्रामीण सफाई (11) गो सेवा (12)आदिवासियों का उत्थान। (13)राष्ट्रभाषा का प्रचार (14)आर्थिक समानता (15)मजदूरों की उन्नति व जागृत

उनका यह मानना था कि "मेरी यह सूची पूर्ण होने का दावा नहीं, करती यह तो महज मिसाल के तौर पर पेश की गई है"।समाज की जरूरत के हिसाब से बढ़ाए भी जा सकते हैं।भारत में गांधी जी ने आजादी की लड़ाई के दौरान रचनात्मक कार्यक्रम को साथ-साथ रखा था और उनका मानना था कि सच्ची आजादी तभी मिल पाएगी जब हम उस लायक बनेंगे। सन, 1920 में गांधी जी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के द्वारा रचनात्मक कार्यक्रम भारत के सामने रखा था। उस समय से इस कार्यक्रम की जरूरत बढ़ती गई और इस बात पर वे अधिकाधिक जोर देने लगे कि संग्राम के पहले नैतिक शक्ति को विकसित करने और अनुशासन को दृढ़ करने तथा जीत के नशे या हार की उदासी से बचने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम सत्याग्रही के लिए आवश्यक है। गांधीजी बराबर इस बात पर जोर देते हैं कि स्वराज प्राप्त करने के साधन के रूप में रचनात्मक काम करते रहना जरूरी है।

महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य

(1) कौमी एकता___:।

गांधीजी जीवन भर कौमी एकता को भारत के मुक्ति संग्राम के दौरान हर एक सकारात्मक प्रयत्न करते रहे। इसके लिए उन्होंने अपने सेवाश्रम आश्रम, कोचरब (1915 _20)साबरमती आश्रम (1920_1933)में सभी हिंदू मुसलमान ,ईसाई ,सिख ,पारसी सभी भारतवासी एक साथ एक परिवार की भांति रहते थे ताकि लोगों में राष्ट्रप्रेम की भावना का विकास हो सके। "ईश्वर अल्लाह तेरो नाम,सबको सम्मति दे भगवान"जैसे भजन गूंजते रहते थे।खिलाफत के मुद्दे पर (1919_22) भारतीय मुसलमान ब्रिटिश सरकार से नफरत करने लगे।गांधी जी ने ऐसे मौके को हिंदू मुस्लिम एकता के लिए उपयुक्त समझा। गांधी जी ने मुसलमानों के साथ सहानुभूति व्यक्ति की।

(2)अस्पृश्यता निवारण___:

गांधीजी जीवन पर्यंत अस्पृश्यता के खिलाफ लड़ते रहे और इसे हिंदू समाज का कोढ़ कहा था।गांधी जी ने जन्म और जाति से चली आ रही छुआछूत एवं अस्पृश्यता की समस्या को कलंक माना। उन्होंने **कहा "मेरी राय में हिंदू धर्म में दिखाई पड़ने वाला स्वच्छता का वर्तमान रूप ईश्वर और मनुष्य के खिलाफ किया गया भयंकर अपराध है।और इसलिए यह एक विष है जो धीरे-धीरे हिंदू धर्म के प्राण को ही नि:शेष किए दे रहा है"। मेरी राय में शास्त्रों में, यदि हम सब शास्त्रों को मिलाकर पढ़ें तो इस बुराई का कहीं कोई समर्थन नही है।**

गांधीजी भारतीय समाज अस्पृश्यता की भावना के इतने प्रबल विरोधी थे कि उन्होंने इसे **रावण तथा डायल** के शैतानी कार्यों से भी अधिक घातक और विशाल राक्षस माना।गांधी का विचार था कि जब तक अस्पृश्यता को समूल नष्ट नहीं कर दिया जाएगा हिंदू समाज उन्नति नहीं कर सकेगा। गांधी को **महात्मा फुले** जैसे लोगों से भी इस विषय में प्रेरणा मिली। अछूतोद्धार के लिए गांधी ने कई क्रांतिकारी कदम उठाएं। अपने आश्रम में उन्होंने अछूतोद्धार का काम सबसे पहले किया,सदियों से चली आई परंपरा के अनुसार मैला उठाना भारत में सबसे निकृष्ट कार्य समझा जाता रहा।अतः गांधी जी ने हरिजन बस्तीयों में जाकर स्वयं यह कार्य किया और लोगों को प्रेरित किया।दलित वर्ग को हरिजन नाम गांधी जी ने ही दिया, इसका शाब्दिक अर्थ होता है 'हरि का जन'अर्थात ईश्वर का व्यक्ति तथा **हरिजन नामक** समाचार पत्र भी निकाला।

गांधी जी द्वारा त्रावणकोर में वायकोम सत्याग्रह चलाया जाना हरिजनोद्धार की दृष्टि से भारतीय इतिहास की एक युगान्तकारी घटना है। 10 अगस्त 1932 को अंग्रेजों ने यह घोषणा की कि वह भावी संवैधानिक अधिनियम मे अछूतो के लिए पृथक निर्वाचन मंडल और उसके लिए निश्चित स्थानों की व्यवस्था करेंगे।इस प्रावधान के विरोध में गांधी जी ने 20 अगस्त 1932 को आमरण अनशन पर बैठ गए जिसके परिणाम स्वरूप सरकार को झुकना पड़ा।यह गांधीजी के प्रयत्नों का परिणाम था कि 1947 के बाद अस्पृश्यता निवारण हरिजनोद्धार के लिए भीमराव अंबेडकर जैसे लोगों का सहयोग मिला और आजाद भारत में बहुत सहूलियत प्रदान की गई।

(3) शराब और अन्य मादक द्रव्य निषेध___:।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अपनाए गए रचनात्मक कार्यों में से एक कार्यक्रम "शराब और अन्य मादक द्रव्य निषेध" था। उनका मानना था कि शराब और अन्य मादक द्रव्यों से होने वाली हानि कई अंशो में मलेरिया आदि बीमारियों से होने वाली हानि की अपेक्षा असंख्य गुनी ज्यादा है। कारण बीमारियों से तो केवल शरीर को ही हानि पहुंचती है ,जबकि शराब आदि से शरीर और आत्मा दोनों का नाश हो जाता है।इसलिए उनके द्वारा स्थापित आश्रम का उद्देश्य अफीम शराब आदि नशीली चीजों के व्यसनों में फंसे हुए लोगों को मुक्त करना व स्वच्छ समाज का निर्माण कराना था।ताकि अंधकारमय हुए इस वातावरण से व्यक्ति व समाज को मुक्ति प्राप्त हो सके।असहयोग आंदोलन के दौरान इनके प्रयत्नों के फल स्वरुप कार्यकर्ताओं के द्वारा एक और कार्रवाई हुई जो बहुत लोकप्रिय हुई। वह थी **ताड़ी की दुकान पर धरना**,हालांकि यह मूल कार्यक्रम मैं नहीं था। सरकार को इससे बहुत आर्थिक नुकसान पहुंचा।

(4)खादी एवं चरखा____:

खादी का घर घर में प्रचार करके और चरखे द्वारा स्वयं सूट काटकर, कपड़े तैयार करके गांधीजी संपूर्ण भारत में एक ऐसी क्रांति ले आए जिसने राष्ट्रीय स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए किए जा रहे आंदोलन को संभ्रांत वर्ग से निकालकर उसे निर्धन किसान की झोपड़ी तक पहुंचा दिया। गांधी जी द्वारा की गई यह क्रांति योजना रचनात्मक थी।जहाँ एक ओर उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की बात की, जिसका नतीजा यह हुआ कि (1920_21) में जहां एक अरब दो करोड़ रुपये मूल्य के विदेशी कपड़ों का आयात हुआ था, वहीं (1921_22) में यह घटकर 57 करोड़ हो

गया। विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार के साथ ही उन्होंने चरखा और खादी को स्वराज की कुंजी बताया। वे कहते थे आश्रम को नियमित रूप से हाथ से कती_ बुनी धोतिया पहननी चाहिए। वे इस समय बड़े प्रसन्न हुए कि उनके द्वारा हिंद स्वराज में कहीं बातें सही सिद्ध हो रही हैं।*1 गांधीजी के अनुसार **"खादी हिंदुस्तान की समस्त जनता की एकता की, उसकी आर्थिक स्वतंत्रता और समानता की प्रतीक है, और इसलिए जवाहर लाल के काव्यमय शब्दों में कहें तो वह हिंदुस्तान की आजादी की पोशाक हैं"।** गांधी जी यह मानते थे कि चरखा भारतीय जनता को गरीबी की समस्या से लगभग बिना कुछ खर्च किए और बिना किसी दिखावे के अत्यंत सरल और सहज तरीके से निजात दिला सकते हैं, इसलिए चरखा एक ऐसी आवश्यक चीज है जो प्रत्येक घर में होनी चाहिए। चरखा राष्ट्र की समृद्धि और आजादी का चिन्ह है, रोजगार व आर्थिक बचत हेतु आवश्यक समझते हुए 22 सितंबर 1925 को अखिल भारतीय चरखा संघ की स्थापना की गई।

***1 गाँधी जी द्वारा मगनलाल गाँधी को लिखा गया पत्र.1 जून 1919**

(5) ग्रामोत्थान___:।

आजादी की प्रक्रिया में गांधीजी के रचनात्मक कार्य में से एक ग्रामोत्थान की योजना भी था। उनका मानना था कि हमें अपने दिन प्रतिदिन की आवश्यकताओं की पूर्ति गांव में बनी चीजों से ही करनी चाहिए। और यदि कोई चीज गांव में नहीं बनती है तो यह प्रयास करना चाहिए कि सहकारिता के आधार पर उन वस्तुओं का उत्पादन गांव में संभव बनाया जाए।भारत में व्यक्तियों की संख्या वैसे भी ज्यादा है यदि यहां पर पश्चात देशों की तर्ज पर यंत्रीकरण किया गया तो बहुत मात्रा में बेरोजगारी बढ़ जाएगी। अतः गांव में कुटीर उद्योग जो पूर्व में चल चल रहे थे,उन्हें पुनर्जीवित किया जाए। जैसे खादी, चरखा, दूध का उद्योग,मधुमक्खी पालन,चमड़े का उद्योग, साबुन तथा हाथ से कागज निर्माण आदि के विशाल एवं व्यापक स्तर पर स्थापित करने के लिए ग्रामीणों को प्रोत्साहन देना होगा, तभी गांव का उत्थान होगा।आजादी के दौरान बहुत से लघु एवं कुटीर उद्योग कांग्रेस व गांधी जी के प्रयत्नों से खुले।

(6) बुनियादी तालीम____:

अंग्रेजों की शिक्षा–व्यवस्था से क्षुब्ध होकर गांधीजी ने एक नई शिक्षा पद्धति की सिफारिश की, इस पद्धति को "वर्धा स्कीम आफ एजुकेशन" का नाम दिया। इस स्कीम का मुख्य आधार था 'बुनियादी शिक्षा'इस शिक्षा की मुख्य बातें इस प्रकार थी।

(1)7–14 वर्ष तक की उम्र तक अनिवार्य एवं नि:शुल्क शिक्षा
(2) शिक्षा का माध्यम मातृभाषा
(3) शिक्षा में 'हस्तकला' को महत्व दिया गया ताकि बालक स्वयं आगे आत्मनिर्भर हो।

सन 1938 में शिक्षा–योजना को लघु अस्तर पर किंतु भारी आशाओं के साथ सरकार एवं शिक्षण संस्थाओं ने अपनाने का प्रयास किया। सेवाग्राम के विद्या–मंदिर में बुनियादी शिक्षा देने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षण देने का कार्यक्रम शुरू किया गया। शिक्षण पद्धति सीधे ग्रामीण जीवन से संबंधित थी, तथा इसे नियमों के कठोर सांचे में ढाला गया था,किंतु इसका राजनीतिक प्रचार अधिक था और शिक्षा को आत्मनिर्भर नहीं बनाया जा सका।

बहरहाल आजादी के बाद भारत सरकार ने शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2002 के द्वारा शिक्षा को मौलिक अधिकार बना दिया, तथा राज्य सरकारें 6–14 वर्ष तक की उम्र के सभी बच्चों को निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान कर रही हैं, और अभी हाल ही में नई शिक्षा नीति में बुनियादी शिक्षा की कुछ बातें ली गई हैं। जिसमें गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम की ही झलक दिखाई देती है।

(7) प्रौढ़ शिक्षा_______:

प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम रचनात्मक कार्यक्रम का एक भाग था ,ताकि जन-जागृति व्यापक स्तर पर फैल सके। गांधीजी के अनुसार____ जनसाधारण में फैली हुई व्यापक निरक्षरता भारत का कलंक है वह मिटना ही चाहिए ताकि ये वृद्ध पुरुष- महिला भी देश की आजादी में कंधे से कंधा मिलाकर चल सके और भारत के मुक्ति संग्राम में योगदान दे सकें।

(8)स्त्री शिक्षा___:।

अगर किसी देश की आधी जनता को निष्क्रिय और निस्प्राण कर दिया जाए तो उसका कितना नुकसान हो सकता है, यह बात गांधी जी अच्छी तरह से जानते थे।उन्होंने लिखा भी है कि **"हमारे देश के कई आंदोलनो की प्रगति हमारे स्त्री समाज की पिछड़ी हुई हालत के कारण बीच में ही रुक जाती है, इस तरह हमारे किए हुए काम का जैसा और जितना फल आना चाहिए वैसा और उतना नहीं आता"।**स्त्री शिक्षा में सुधार को गांधीजी ने अपने रचनात्मक कार्यक्रम का महत्वपूर्ण भाग माना। गांधी जी ने अपने आश्रम में स्त्रियों को पुरुषों के समान बराबर स्थान दिया। उसमे गांधी जी की पत्नी कस्तूरबा गांधी,मीरा बहन, मणि बहन पटेल, सुशीला नैयर, मनुगांधी, राजकुमारी अमृत कौर आदि प्रमुख थी, जिन्होंने भारत के मुख्य संग्राम में महान योगदान दिया।

(9) कुष्ठ रोगी सेवा____:।

गांधीजी किसी भी व्यक्ति से घृणा नहीं करते थे। उनका कहना था"पाप से घृणा करो, पापी से नहीं"। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के समय कुष्ठ रोगियों को समाज धेय दृष्टि से देखता था। गांधीजी सन 1932 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने वाले **'परचुरे'** नाम के एक सत्याग्रही के झड़ते हुए कोढ़ का इलाज करने का काम अपने हाथ में लिया। अन्य डरे हुए लोगों ने भी गांधीजी का अनुसरण करते हुए परचुरे की सेवा तथा मालिश आदि काम अपने हाथ में लिए।**परचुरे** ठीक होने लगा और उसने गांधीजी के निर्देश पर हरिजन एवं सभी हिंदुओं में परस्पर विवाह कराने संबंधी कार्य शुरू किए।

(10) ग्रामीण सफाई____:।

गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम में ग्रामीण सफाई भी एक महत्वपूर्ण कदम था। उनका मानना था जिस जगह शरीर सफाई, घर सफाई और ग्राम सफाई हो, तथा युक्ताहार और योग्य व्यायाम हो वहां कम से कम बीमारियां होती हैं। चंपारण आंदोलन के दौरान उन्होंने कुछ गांवों का दौरा किया जहां गंदगी प्रदूषण आदि को देखा तथा पाया कि महिलाओं को पुरुष से ज्यादा सफाई की जरूरत है। अतः इस कार्य के लिए अपनी पत्नी कस्तूरबा गांधी को भी जोड़ा।गांव में साफ सफाई सिखाने,बीमारियों की देखभाल करने, परदा जैसी प्रथा का विरोध जैसे कामों में लग गई स्थिति जल्द ही सुधर गई। गांधीजी बनारस की गलियों व विश्वनाथ मंदिर के आसपास व कई बार ट्रेनों में हुई गंदगी को अपने हाथ से साफ किया था।आज सरकार उनके इस रचनात्मक कार्य को स्वच्छ भारत मिशन अभियान के रूप में आगे बढ़ा रही है।

(11)गौ सेवा____:

हिंदू धर्म की मुख्य वस्तु है गो रक्षा या गो सेवा। गाय को भारतीय संस्कृति का प्राण वायु माना जाता है। अतः गांधीजी ने गायों की रक्षा हेतु 1927 के आसपास 'अखिल भारतीय गौ संवर्धन संघ' की स्थापना की। इसका उद्देश्य गायों का वैज्ञानिक ढंग से पालन _पोषण करना सिखाना, अच्छे बैल प्राप्त करना ,दूध बढ़ाना आदि था। इस कार्य के लिए शिक्षण_ प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करने का भी निर्णय किया गया ।गांधी जी का कहना था- गाय के गोबर ,कचरे और मनुष्य के मल वगैरह में से खूबसूरत सुगंधित खाद मिल सकता है यह सुनहली चीज है यह खाद बनाना भी एक ग्रामोद्योग ही है ।यह तभी चल सकता है जब करोड़ों लोग उस में हिस्सा ले मदद करें।

(12)आदिवासियों का उत्थान____:

आदिवासी भारतीय समाज के अभिन्न अंग हैं बिना उनको साथ लिए भारत की प्रगति संभव नहीं है तथा भारत को आजाद कराने में भी दिक्कतें आएंगी ।यह बात गांधीजी बखूबी जानते थे अतः आदिवासियों के उत्थान व साथ के लिए अपने आश्रम मे उनको जगह दिया उनकी भोजन, शिक्षा ,स्वास्थ्य ,सफाई ,आदि के बारे में सदैव तत्पर रहते थे।

(13) राष्ट्रभाषा का प्रचार___:।

भारत के मुक्ति संग्राम के दौरान राष्ट्रीय भाषा का प्रचार करना भी गांधीजी के रचनात्मक कार्यों का ही एक अंग था। गांधी जी का कहना था कि भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी ही हो सकती है। उनका तर्क था कि जितने साल हम अंग्रेजी सीखने में बर्बाद करते हैं उतने ही महीने भी अगर हम हिंदुस्तानी भाषा सीखने की तकलीफ ना उठाएं तो सचमुच कहना होगा कि जन_साधारण के प्रति प्रेम की जो डींगे हम हांका करते हैं, वे निरी डींगे ही हैं। गांधीजी के प्रयत्नों से असहयोग आंदोलन के दौरान जो रचनात्मक कार्यक्रम रखे गए थे उसमें से एक यथासंभव हिंदी का प्रयोग भी था। स्वयं गांधीजी अधिकांशत अपने भाषण समाचार पत्रों आदि में हिंदी को प्रमुख स्थान भी देते थे।

(14) आर्थिक समानता___:।

जिस समय गांधी जी ने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया उस समय भारत की आर्थिक स्थिति सोचनीय थी। भारतीय अर्थव्यवस्था जनता की आकांक्षाओं की पूर्ति में पूर्णरूपेण अक्षम थी। अतः उन्होंने एक संपूर्ण आर्थिक दर्शन प्रस्तुत किया,जिसमें आर्थिक समानता एक महत्वपूर्ण बिंदु है।गांधीजी के अनुसार आर्थिक समानता, अर्थात जगत के पास समान संपत्ति का होना,यानी सब के पास इतनी संपत्ति का होना कि जिससे कि अपनी कुदरती जरूरतें पूरी कर सकें।आर्थिक समानता के साथ एक कदम और आगे बढ़ कर उन्होंने ट्रस्टीशिप का सिद्धांत दिया था, पूजीवाद बाजारवाद, उपनिवेशवाद की खिचड़ी में धनी व्यक्ति व देश और धनी हो रहे हैं, गरीब व्यक्ति व देश और गरीब हो रहे हैं। गांधी के आर्थिक समानता को अगर अमल में लिया जाए तो देश के आर्थिक विसंगतियों को दूर किया जा सकता है।

(15) मजदूरों की उन्नत व जागृत______:

मजदूरों की उन्नत व जागृत के लिए गांधीजी सदैव तत्पर रहते थे। उनका मानना था कि हर आदमी अपने हक पर जोर देने के बजाय अपना फर्ज अदा करें तो मनुष्य जाति में जल्दी ही व्यवस्था और अमन का राज्य कायम हो जाए। गांधीजी भारत के मुक्ति संग्राम में हमेशा मजदूरों के प्रति सहानुभूति रखते थे। अहमदाबाद का मजदूर आंदोलन (1918) में मिल मालिक और मजदूरों के बीच मजदूरी बढ़ाने के सिलसिले में मजदूरों का पक्ष लिया तथा आगे चलकर मेरठ षड्यंत्र केस (1929_ 33)व अन्य विभिन्न मजदूर आंदोलन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लगे रहे ।मजदूरों में अपने अधिकारों के लिए जागृति आए इसके लिए शिक्षा का भी प्रबंध किया।

निष्कर्ष__________ भारत के मुक्ति संग्राम के दौरान गांधी जी द्वारा किए गए रचनात्मक कार्य जिन्हें उस समय असंभव कहकर परे कर दिया गया था, या जिन्हें जनता समझ नहीं पाई। हालांकि गांधीजी के कुछ रचनात्मक कार्य आदर्शवाद में डूबे थे। परंतु फिर भी कुछ कार्य आज ना केवल संशोधित रूप में स्वीकार किए जा रहे हैं बल्कि अपनाए भी जा रहे है,उदाहरण के लिए खादी एवं कुटीर उद्योग ,बुनियादी तालीम के अंतर्गत कुछ बातों को वर्तमान में नई शिक्षा नीति में रोजगार परक शिक्षा के साथ जोड़ा जा रहा है, समाज स्वच्छ हो इसके अंतर्गत स्वच्छ भारत मिशन अभियान **स्त्री समानता** के संदर्भ- में **आशा बहुएं**, आंगनबाड़ी अध्यापिका तथा कुछ अन्य नौकरियों में आरक्षण देना, **मजदूरों की उन्नत के लिए-** श्रमिकों के वेतन ,आवास, स्वास्थ्य, पीएफ जैसी सुविधाएं देना तथा अन्य योजनाएं जैसे -मेक इन इंडिया, स्टैंड अप इंडिया ,कौशल भारत कुशल भारत योजना ,पंजाब में 'मेरा काम ,मेरा मान योजना(बेरोजगार युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें रोजगार मुहैया कराने हेतु) तथा हाल ही में प्रधानमंत्री मोदी ने भी कहा कि "लोग अगले 25 साल तक स्थानीय उत्पाद खरीदे तो बेरोजगारी नहीं रहेगी ,वोकल फॉर लोकल को आत्मसात करना होगा" इन सब बातों व प्रयासों में गांधीजी के विचार व रचनात्मक कार्य की झलक मिलती है जो यह सिद्ध करता है कि भारत के मुक्ति संग्राम में महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य 21वीं सदी के लिए भी सार्थक और उपयोगी हैं ।

महात्मा गांधी की विश्व को सबसे बड़ी देन यह नहीं है कि कि उन्होंने भारत को अंग्रेजों से मुक्ति दिलाई। आजादी तो उनके ना होने पर भी मिलती क्योंकि यह एक ऐतिहासिक क्रम था ।गांधी जी की देन तो भारत की आजादी दिलाने के रचनात्मक कार्यों के सफलतापूर्वक लागू करने के तरीके में था जिसमें विरोध किसी व्यक्ति समूह का नहीं किया गया अपितु व्यवस्था या तंत्र का किया गया ।

संदर्भ सूची____:

(1) गांधी,मोहनदास करमचंद (2010)सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद

(2)गांधी ,महात्मा (2019)मेरे सपनों का भारत, राजपाल एंड सन्ज दिल्ली

(3)मोहन, अरविंद (2018)बा_बापू,राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली

(4)शर्मा, बी.एम.शर्मा, रामकृष्ण दत्त,शर्मा सविता (2015) गांधी दर्शन के विविध आयाम, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी,जयपुर

(5)जोशी, एम.सी (2015) गांधी ,नेहरू ,टैगोर, आंबेडकर, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद

(6)चंद्र विपिन, मुखर्जी मृदुला, महाजन सुचेता (2009) भारत का स्वतंत्रता संघर्ष,हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, 29 वा संस्करण

(7)शुक्ल.आर.एल (2008) आधुनिक भारत का इतिहास (स्वतंत्रता प्राप्ति और देश विभाजन तक)हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, 9वा पुनर्मुद्रण

(8)ग्रोवर.वी.एल.यशपाल (2008) आधुनिक भारत का इतिहास, एक नवीन मूल्यांकन, एस .चंद्र एंड कंपनी लिमिटेड, नई दिल्ली, 28 वा संस्करण

(9)दैनिक जागरण प्रयाग राज, 17 अप्रैल 2022

डॉ मनोज कुमार सिंह राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ जौनपुर मो-9415174138.